

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : दिसम्बर 2012

प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (ज्योतिष योग)

1. बुध की महादशा में निम्न जन्मांग का सामान्य विवेचन करें :-
लग्न-3 रा 27°.48', सूर्य- 7 रा 04°.07', चन्द्रमा-9 रा 05°.36'
मंगल-4 रा 16°.22', बृध-7 रा 13°.13', बृहस्पति (व)-1 रा 15°.00'
शुक्र- 8 रा 21°.00', शनि- 3 रा 21°.47', राहु-8 रा 09°.12'
(19-11-1917, रात्रि 11.13 बजे 22एन27, 81ई51)
सूर्य भोग्य दशा 1वर्ष 11 महीने 22 दिन
2. इनके उत्तर दीजिए :-
अ) मिथुन लग्न के लिए केन्द्राधिपत्य दोष
आ) नवांश कुण्डली का महत्त्व
इ) उच्च के शनि का राशि कुण्डली पर प्रभाव
ई) वसुमती योग
3. विपरीत राज योग क्या होते हैं? उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करिये।
4. निम्नलिखित के उत्तर दीजिए :-
i. ग्रहों की अवस्था का फलादेश में किस तरह प्रयोग होता है?
ii. भाव एवं भावेश की बल का आंकलन आप किस प्रकार करेंगे?
5. नैसर्गिक शुभ ग्रहों की केन्द्र स्थान में स्थिति एवं नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की त्रिकोण स्थान में स्थिति का ग्रहों पर क्या प्रभाव पड़ता है? उदाहरण के द्वारा विस्तार से समझाइये।

भाग-II (दशा व गोचर)

6. निम्नलिखित के नियमों के बारे में बताईये :
अ) विंशोत्तरी महादशा के परिणाम
आ) योगिनी महादशा के परिणाम
7. शुक्र की महादशा के परिणाम को विस्तार से समझाइये।
8. शनि के साढ़ेसती, अष्टम और अर्धअष्टम गोचर को विस्तार से समझाइये?
9. बृहस्पति ग्रह के गोचर के क्या परिणाम होते हैं?
10. वेध और विपरीत वेध से आप क्या समझते हैं?